International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 10-08-2023, Accepted: 22-08-2023, Published: 11-09-2023
Volume 9, Issue 5, 2023, Page No. 13-15

सुशीला टाकभौरे के साहित्य में दलित समस्याएँ

रवीन्द्र कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय भतरौंजखान, अल्मोडा, उत्तराखण्ड, भारत

सारांश
प्राचीन काल से ही मनुष्य चार वर्णों में विभक्त था–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र। पहले ये विभाजन कर्मों के आधार पर था, परन्तु बाद में ये जन्म के आधार पर जाना जाने लगा। शूद्रों का सदियों से ही भेदभाव का सामना करना पड़ रहा था जो कि मानवीय दृष्टिकोण से उचित नहीं था। आधुनिक दौर में शिक्षा में बढ़ते प्रचार–प्रसार के कारण कुछ दलितों के साथ सामाजिक समस्यओं में सुधार तो हुआ है पर कुछ जस की तस बनी हुई है। ग्रामीण क्षेत्रों की जस से तस बनी हुई समस्याओं से छुटकारा पाने के लिए अभी और समय लग जाएगा। सुशीला टाकभौरे द्वारा सदियों से चले आ रहे दलित उत्पीड़न और शोषण के खिलाफ लोगों को जगाने में सफलता प्राप्त की। ऊंच–नीच का भेदभाव, अस्पृश्यता,दलित नारी जीवन की विडम्बनाओं, अंधविश्वास, दलित वर्ग में व्याप्त भेदभाव, दलितों का आर्थिक शोषण,आवास की परेशानियां, दलितों पर होनें वाले अन्याय, अत्याचार कों अपनी लेखनी के मध्य में रखा। उन्होनें अपनी सास और ननद के अत्याचारों को बताकर 'औरत ही औरत की दुश्मन होती है इस बात को सही साबित किया है। इसके अलावा यह भी बताया है कि स्त्री की स्थिति हमेशा समाज में दोयम दर्जे की ही रहती है।

मूल शब्दः प्रतिकार, संविधान, तृष्णा,'विप्र वर्ग,लावारिस,यतीम, आदि

मनुष्य का जन्म समाज में होता है। उसी समाज में जीवन यापन के लिए उसे संघर्ष करना पड़ता है। उसके सामाजिक प्राणी होनें के नातें उसका जीवन किसी न किसी समस्या से घिरा अवश्य रहता है। यदि जीवन में संघर्ष न हो तो जीवन नीरस बनकर रह जाता है। यदि प्राकृतिक समस्या हो तो मनुष्य उसका सामना हंसते–हंसते कर लेता है,अगर समस्या मानव द्वारा उत्पन्न की गई हो तो उसके प्रतिकार के लिए संघर्ष करना पड़ता है। जिसमें कभी उसे हार मिलती है तो कभी सफलता। प्राचीन काल से ही मनुष्य चार वर्णों में विभक्त था–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र। पहले ये विभाजन कर्मों के आधार पर था, परन्तु बाद में ये जन्म के आधार पर जाना जाने लगा। शूद्रों का सदियों से ही भेदभाव का सामना करना पड़ रहा था जो कि मानवीय दृष्टिकोण से उचित नहीं था। आधुनिक दौर में शिक्षा में बढ़ते प्रचार –प्रसार के कारण कुछ दलितों के साथ सामाजिक समस्याओं में सुधार तो हुआ है पर कुछ जस की तस बनी हुई है। ग्रामीण क्षेत्रों की जस से तस बनी हुई समस्याओं से छुटकारा पाने के लिए अभी और समय लग जाएगा। समाज का विकास समाज में रह रहे मनुष्यों के आपसी तालमेल पर निर्भर करता है। यदि समाज दो भागों उच्च और निम्न वर्ग में विभक्त हो तो या असमानता हो तो उस समाज के विकास की कल्पना नहीं की जा सकती। प्रसिद्ध हिन्दी दलित सुशीला टाकभौरे ने अपने दलित साहित्य में असंख्य दलित समस्याओं को अंकित कर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने का कार्य किया है। डॉ. भीमराव द्वारा निर्मित संविधान से कुछ समस्याओं का समाधान तो हुआ है परन्तु कुछ समस्याएं अभी भी उनके विकास में बाधा बनी हुई है।

भारतीय समाज में सवर्ण जाति द्वारा जातीयता के बीच बोकर दलितों या शूद्रों जीवन नरकीय बना दिया है। जातिगत भेदभाव के कारण दलितों के हिस्सें दुःख वेदना के अलावा कुछ नहीं मिलता है। उपरोक्त समस्या के कारण उनके प्राकृतिक अधिकारों की छीन लिया गया जिसकी वजह से उनको उच्च वर्ग की कृपा दृष्टि पर निर्भर रहना होता है। इस पर सुशीला टाकभौर ने इस प्रकार अभिव्यक्त किया है–

''जब तक संसार में अशान्ति है
असत्य,तृष्णा, अधर्म,हिंसक नीति क्रान्ति है
मानव–मानव के बीच भेदभाव है
समाज में समानता,मानवता का अभाव है
निवारण मुक्ति की निद्रा नहीं।''[1]

हिन्दू समाज में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यों की मानसिकता को आसानी से नहीं बदला ला सकता है। आधुनिक भारतीय समाज में जो वर्ग ज्यादा सम्पन्न है उसी का सामाजिक महत्व ज्यादा होता है। जो गरीब या साधनहीन है उसको कोई महत्व नहीं देता। सुशीला के अनुसार–

''यहां कीमत है,
उच्चता श्रेष्ठत वर्ण और जाति की
ह्रदय के स्थान पर प्रधानता है भेदभाव की
समझते नहीं समझाने पर कोई
डूबे है अपने अहं में।''[2]

भारतीय समाज में शिक्षा के मन्दिर कहे जाने वाले स्कूलों में दलित जाति के बच्चों के साथ होने वाले भेदभाव को सुशीला टाकभौरे ने अपने अनुभव के आधार पर अपनी कहानी 'मेरे बचपन' में स्वयं के साथ घटित घटना के बारे में बताते हुए कहती है–''कक्षा में ब्राह्मण,बनियों के बच्चों को सबके आगे बैठाया जाता था। पिछड़ी जाति के बच्चों को सबसे पीछे बैठाया जाता। अछूत बच्चें सबसे पीछे अलग बैठते थे।..... मैं कक्षा में सबसे पीछे बैठती थी। स्कूल के सभी शिक्षक और सभी बच्चें मेरी जाति के विषय में जानते थे। सबके मन में मेरे लिए एक निश्चित दूरी थी। मैं नहा कर साफ–सुथरे कपड़े पहनकर स्कूल जाती, फिर भी स्कूल के बच्चों अध्यापकों और चपरासी के लिए अछूत ही थी।''[3] उच्च जाति के लोग दलितों के द्वारा बनाये गये मंदिरों को अपवित्र ही मानते है। सिर्फ खुद के बनाये गये मंदिरों को वो पवित्र मानते है। सुशीला टाकभौरे की नानी जब पूजा–पाठ के लिए नये मंदिर का निर्माण करती है तो कोई भी पंडित उस मंदिर में पूजा करने नहीं आता। इसका उल्लेख

लेखिका ने अपनी कहानी 'मंदिर का लाभ' में इस प्रकार किया है –''शास्त्रों में कहीं नहीं लिखा है कि तुम्हारी जाति के लोग मंदिर बनवायें और भगवान की स्थापना करें। तुम लोगों ने बड़ा पाप किया है भगवान को भी अपवित्र कर दिया,हम ऐसे काम में तुम्हारा साथ नहीं दे सकते।''[4]

लेखिका द्वारा अपने उपन्यास 'तुम्हें बदलना ही होगा' में चमनलाल और महिमा द्वारा लव मैरिज कर लेने पर उच्च वर्ग के चमनलाल के परिवार द्वारा निम्न जाति की महिमा का स्वीकार नही करते है। चमनलान अपने बचाव में महिमा की भारती सरनेम होने और भारती जाति के अछूत होने का उसे न पता होने के बात कहते हुए उच्च वर्ग की मानसिकता का परिचय चमनलाल के पिता द्वारा इस तरह दिया जाता है–''क्या बाबले जैसी बातें कर रहे हो ? जमाना गांधी जी का हो या अंबेडकर का, मगर जात–पात समाज में रहेगी न। हम बजाज मारवाड़ी, बनिया परिवार के है, तो बजाज ही कहलाएंगे। वह लड़की 'भारती' कहलाकर ब्राह्मण नहीं बन सकती यह तुमने क्यों नहीं सोचा ?''[5]

भारतीय समाज में शिक्षकों का स्थान हमेशा सर्वोच्च रहा है जो एक अंधकारमय मस्तिष्क को ज्ञान से भरकर उसे रोशन कर देता है। जिसके करण वह बालक समाज में सम्मानित जीवन यापन करता है। परन्तु कुछ शिक्षक ऐसे भी होते है जो अपने शिष्यों की प्रगति में बाधा उत्पन्न करते है। सवर्ण जाति के शिक्षक दलित जाति के बच्चों के साथ ऊंच–नीच का भेदभाव करके उन्हें पढ़ाई छोड़ने का मजबूर कर देते है। सुशीला टाकभौरे कहती है–

''गुरू 'विप्र वर्ग' ने
अपनी महानता बनाये रखने के लिए
शिक्षा से वंचित रखा
शोषित अछूत मूलनिवासी वर्ग
फिर भी लेते रहे दक्षिणा रूप में
उनसे बलिदान
क्या इन्हीं बातों से कहलाता है
'मेरा देश महान'।''[6]

सुशीला टाकभौरे इतिहास की एक घटित घटना को याद दिलाती हुईं कहती है कि भील एकलब्य द्वारा गुरूदक्षिणा में अपने हाथ का अंगूठा कटवा दिया था। लेखिका भारतीय समाज से प्रश्न करती हुईं कहती है कि–

''पर क्या
पूरे समाज के हाथ भी
काट दिये गये थे?
हाथ नहीं उठाया किसी ने भी
गुरू भक्ति के नाम पर
आवाज नहीं उठाईं
विषमता और स्वात की बात को
तुम सबने मौन रूप स्वीकार किया।''[7]

'नीला आकाश' उपन्यास में भीकूजी और चंदरी अपनी सभी संतानों को उच्च शिक्षा दिलाने की हर सम्भव कोशिश करते है,मगर सवर्ण शिक्षकों द्वारा उनको कक्षा पांच व आठ से आगे नहीं बढ़ने दिया जाता। चंदरी दुःख प्रकट करते हुए कहती है कि ''हम सिर्फ अपने बच्चों को दोष देते हैं.....बच्चों से यह कहना की पढ़–लिख लो,जिंदगी सुधर जायेगी, आसान है मगर छुआछूत, भेदभाव, दुत्कार,अपमान हिंसा, अत्याचार के साथ पढ़ पाना बहुत कठिन है।''[8] 'शिकंजे का दर्द' अपनी आत्मकथा में लेखिका ने शिक्षा क्षेत्र में दलित बच्चों के साथ सवर्ण शिक्षको के अमानवीय व्यवहार किया जाता है इस संबंध में उन्होनें लिखा है –''गरीब पिछड़े, अछूत वर्ग के बच्चें घंटों सजा भोगते, मानों गुरू जी उन्हें सजा देकर भूल गये हों। बच्चें रोने लगते तब गुरू जी का याद आता और वे कहते –अच्छा–अच्छा.....ठीक है.....ठीक है.. ....बैठ जाओं। मेरे सजा ऐसे ही लम्बी होती थी।''[9]

समाज में महिलाओं की स्थिति दूसरे दर्जे की होती है। उन महिलाओं में दलित महिलाओं की स्थिति बहुत ही निम्न श्रेणी की होती है। दलित होने के कारण समाज में उनको शोषण का शिकार बनना होता है। दलित समाज या परिवारों के नियमों में बंधकर जीना पड़ता है। सुशीला के शब्दों में–''हमारे जाति समुदाय में शादी 14.–15 वर्ष में कर दी जाती थी। मां मेरे लिए अच्छे पढ़े–लिखे वर की तलाश में थी। मेरे पिता दूर–दूर शहरों में अच्छे वर की तलाश में जाते थे। वर पसंद न आने पर शादी टाल दी जाती और मैं आगे पढ़ती रही। जब मैं बी.ए में थी, सगे संबंधी रिस्तेदार मेरे मां पिता जी से कहने लगे थे –'कब तक लड़की को पढ़ाते रहोगे ? कब तक बैठाकर रखोगे? ऐसे तो लड़की बूढ़ी हो जाएगी। उसके साथ की लड़कियों की शादी हो गई और वे एक–एक, दो–दो,बच्चों की मां भी बन गयी हैं।तुम लोग लड़की की तरफ से आंखें बन्द करके बैठ गये हो।''[10]

दलित वर्ग में अनमेल विवाह होना आम बात है 'नीला आकाश' उपन्यास में चंदरी की चारों बेटियों के लिए योग्य वर न मिल सके। इसका दुःख चंदरी को हमेशा रहता है। लेखिका द्वारा दलित वर्ग में लड़का और लड़कियों में होने वाले भेद का इस तरह बताया है–''गरीब पिछड़े वर्ग की जाति समाज में इस तरह अनमेल विवाह का होना या अन्तर होना कोई नई बात नहीं है। कभी–कभी लोग लावारिस,यतीम,ठिकने,नाटे वर से भी अच्छी भली लड़की का विवाह कर देते है....और यह कहकर संतोष कर लेते है कि लड़का अच्छा है। लड़के तो हमेशा अच्छे ही होते है क्योकि वो लड़के होते है। उनके सौ दुर्गण माफ होते है। लड़की सर्वगुण सम्पन्न होकर भी बस लड़की ही रहती है।''11

दलित वर्ग में बेरोजगारी का मुख्य कारण अशिक्षा है। सवर्ग वर्ग के शिक्षकों द्वारा उनको शिक्षा ग्रहण करने से रोका जाता है उन्हें समाज के लिए चिंता होती है कि जो काम दलित वर्ग पुस्तों से करते आ रहा है यदि ये पढ़ लिख जाएं तो इनका ये पुस्तैनी कार्य को कौन करेगा। दलितों को ग्राम स्तर पर ही प्राथमिक सुविधाएं नहीं मिल पातीं। सुविधा के अभाव में दलितों के बच्चें पढ़ लिख नहीं सकते। यह सिलसिला सदियों से चला आ रहा है। इसलिए कवयित्री का मानना है कि–

''कस्कुट के वर्तन,झोपड़ी जैसे मकान,
रह जाए अशिक्षित,संतान, वर्तमान पीढ़ी इक्कीसवीं सदीं में
अपनाये पूर्वजों के तुच्छ रोजगार,
यह तुम नहीं हो सकते–
यह तो शर्म की बात है।''[12]

'नयी राह की खोज' कहानी में अपनी गरीबी की वजह से रामचन्द अपने बेटे लाल चन्द चार वर्ष अंग्रजी की कक्षा पढ़नें के बाद पांचवे वर्ष में हिन्दी प्राइमरी स्कूल में डाल देते है। इस पर लालचन्द के दादी का कहना था कि –''अरे आगे चलकर बाप की ही तो काम करना है। क्या जरूरत है अंग्रजी पढ़ाई–लिखाई की। साब बाबू की नौकरी हम लोगों के नसीब में कहां होती है ?''[13] दलित वर्ग का व्यक्ति चाहे जितने उच्च पद पर पहुंच जाता है लेकिन उस व्यक्ति का मूल्य उसकी जाति से ही जाना जाता है। जिन परिस्थितियों ने उन्हें घारे यातना दी है वह उन्हीं परिस्थितियों में रहकर ही खुश रहना चाहता है। इसलिए उन दलितों का विकास सम्भव नहीं हो पाता। सुशीला टाकभौरे के शब्दों में –

''मेरी बिरादरी चुप है
वह नहीं जानती दिशाज्ञान
नहीं जानती प्रगति परिवर्तन का मार्ग
आश्चर्य में डूबी,वह सब सुनती है
टुकूर–टुकुर देखती है फिर भी
विश्वास करती है भाग्यवाद पर
द्वैतवाद पर,हिन्दुत्व पर
सोचती है
लग जायेगा बेड़ा पार अपने आप।''[14]

दलित सदियों से चली आ रही रूढ़िवादी परम्पराओं को निभाने में खुद को गर्ववान्वित समझता है। ऐसी ही एक परम्परा है लड़कियों को कम उम्र में विवाह बन्धन में बांधना और उसे जेवर दहेज से लादकर ससुराल भेजना। इस परम्परा का वर्णन लेखक ने इस प्रकार से किया है–''मां बाप चाहे कितने भी गरीब होवें लड़की की शादी होने पर उसके नाक कान को खुद ही ढांकर ससुराल भेजना चाहिए। चाहे कर्जा करो या उधार लो, इतना तो करना ही है।''[15] 'नीला आकाश उपन्यास में मांग और वाल्मीकि नाम की दो निम्न जातियों का वर्णन है। मांग जाति की कलिया नामक स्त्री पात्र अपनी जाति का दलितों से उच्च मानती है। वाल्मीकि जाति के लोगों को हमेशा ताना मारती रहती है। जब वाल्मीकि जाति के लोग उसे ऐसा व्यावहार करने से रोकते है तो वह उनका ऊंच नीच का पाठ पढ़ा देती है। एक बार वाल्मीकि जाति की बुधिया का तटस्थ रूप से समझा देती है –''जाति तो मां के पेट से आती है भाभी....काम चाहे कोई भी करों,चाहे प्रेम से रहो, चाहे नजदीक पास में रहों, जाति जाति में अंतर तो रहेगा ही नहीं तो एक दिन बामन और वाल्मीकि एक नहीं हो जाएंगें।''[16]

समाज में आज भी दलितों का आर्थिक रूप से शोषण होता रहा है। जो शोषण दलितों के साथ हो रहा है कहीं न कही स्वयं दलित ही उसके लिए जिम्मेदार है। दलित अपने जन्म से लेकर मृत्यु भोज तक हद से ज्यादा पैसा खर्च करता है। जिसके लिए वह कर्च लेता है जिसे वह जीवनपर्यन्त नहीं चुका पाता है। जिसके कारण उसे कर्च देने वाली की जिन्दगी भर गुलामी करनी पड़ती है। 'यह शर्म की बात है' कविता में सुशीला लिखती है–

''डूबे रहे कर्ज में,
पसीने की कमाई
देते रहे ब्याज में
चलता रहे पीढ़ी दर पीढ़ी कर्च
उत्तराधिकारी के रूप में
लिखा दे नाम वंशजों का
यह तुम नहीं हो सकते
यह तो शर्म की बात है।''[17]

निष्कर्ष

सुशीला टाकभौरे द्वारा सदियों से चले आ रहे दलित उत्पीड़न और शोषण के खिलाफ लोगों को जगाने में सफलता प्राप्त की। ऊंच–नीच का भेदभाव,अस्पृश्यता,दलित नारी जीवन की विडम्बनाओं, अंधविश्वास, दलित वर्ग में व्याप्त भेदभाव, दलितों का आर्थिक शोषण,आवास की परेशानियां, दलितों पर होनें वाले अन्याय, अत्याचार कों अपनी लेखनी के मध्य में रखा। दलित व नारी शोषण उनकी चेतना, कविता का मुख्य स्वर रहा है। उनकी कहानी संग्रह'संघर्ष' में दलितों द्वारा सवर्णों के खिलाफ उठाई गई आवाज का चित्रण मिलता है।

नीला आकाश उपन्यास दलित और नारी सशक्तिकरण दोनों को साथ लेकर चलता है। 'तुम्हें बदलना ही होगा' उपन्यास अंतर्जातीय विवाह के द्वारा समाजिक समानता पर बल देता है। 'वह लड़की' उपन्यास में दलितों को उच्चशिक्षित बनने पर ही शोषण से मुक्ति पर बल दिया जाता है। डॉ0 भीमराव के त्रिसूत्र–'शिक्षित बनों, संगठित रहो, संघर्ष करों की नीव पर लेखिका ने तीनों उपन्यासों की रचना की है। 'शिकंजे का दर्द' आत्मकथा के माध्यम से लेखिका लेखिका ने दलित वर्ग की समस्याओं, विडम्बनाओं, समाज द्वारा नारी के साथ अपनाये जाने वाल दोहरे मापदंडों,की अभिव्यक्ति की है। उन्होनें अपनी सास और ननद के अत्याचारों को बताकर 'औरत ही औरत की दुश्मन होती है इस बात को सही साबित किया है। इसके अलावा यह भी बताया है कि स्त्री की स्थिति हमेशा समाज में दोयम दर्जे की ही रहती है। चाहें वो शिक्षित हो या अशिक्षित,घरेलू हो या कामकाजी, उसका शोषण ही होता है।

सन्दर्भ सूची

1. टाकभौरे सुशीला,''मेरे काव्यसंग्रह यह तुम भी जानों'',पृ0स0 42
2. टाकभौरे सुशीला,''स्वाती बूंद और खारे मोती'',पृ.स. 65 .
3. टाकभौरे सुशीला,''टूटता वहम'',पृ.स. 17 .
4. वहीं, पृ.स. 49–50.
5. टाकभौरे सुशीला,''तुम्हें बदलना ही होगा'',पृ.स. 120
6. टाकभौरे सुशीला,''हमारे हिस्से का सूरज'',पृ.स. 179 .
7. वहीं, पृ.स. 191.
8. टाकभौरे सुशीला,''नीला आकाश'',पृ.स. 38 .
9. टाकभौरे सुशीला,''शिकंजे का दर्द'',पृ.स. 43 .
10. टाकभौरे सुशीला,''टूटता वहम'',पृ.स. 33.
11. टाकभौरे सुशीला,''नीला आकाश'',पृ.स. 59 .
12. टाकभौरे सुशीला,''यह तुम भी जानो'',पृ.स. 44.
13. टाकभौरे सुशीला,''टूटता वहम'',पृ.स. 66.
14. टाकभौरे सुशीला,''हमारे हिस्से का सूरज'',पृ.स. 33.
15. टाकभौरे सुशीला,''वह लड़की'',पृ.स. 14.
16. टाकभौरे सुशीला,''नीला आकाश'',पृ.स. 82.
17. टाकभौरे सुशीला,''यह तुम भी जानो'',पृ.स. 44.